राग - पीलू

थाट - काफी
वादी - ग
संवादी - नि
जाति - षाडव - सम्पूर्ण
समय - दिन का तीसरा प्रहर
समप्रकृति राग - कोई नहीं।

आरोह - प़ ऩि सा रे ग॒ S रे सा ऩि, सा ग म प, नि सां

अवरोह - सां नि॒ ध॒ प, ग म ध॒ प ग॒ S रे सा ऩि॒ S सा

पकड़ - प़ ऩि सा रे ग॒ S रे सा ऩि S ध़॒ प़, म़ प़ ऩि सा।

वर्ज्य स्वर - आरोह में ध

विकृत स्वर - रे, ग, ध, नि (दोनों)

विशेषता :- इस राग में ठुमरी गाई जाती है, इसमें अन्य रागों की छाया दिखाने का प्रचार है। यह पूर्वांग प्रधान राग है। इसमें मन्द्र और मध्य सप्तक के स्वरों का खूब प्रयोग होता है। इसलिये मध्यम को षड्ज मानकर पीलू राग को गाने बजाने की प्रथा है।

आलाप

1) सा, नि़ सा, नि़ सा, नि़ सा रे ग॒ ऽ रे सा रे सा रे ग॒ ऽ रे ऽ ऽ सा ऽ ऽ नि़, सा नि़ ध॒ प़, म़ प़ नि़ ऽ ध॒ ऽ प़, म़ प़ नि़ ऽ नि़ सा।

2) नि़ सा ग॒ ऽ ग॒ रे ग॒ म ग॒, ग॒ म ग॒ म रे ग॒ म ग॒, म ग॒ ऽ रे ग॒ सा रे सा रे ग॒ रे सा नि़, ध॒ प़, प़ ध॒ नि़ सा, नि़ सा प ग॒ ऽ रे सा, सा नि़ सा ग॒।

3) नि़ सा ग॒ म प, ग॒ म ग॒ म प, ध॒ प, प ध॒ नि॒ ध॒ प, ग॒ रे ग॒ ऽ रे सा, रे सा रे ग॒ रे सा नि़, ध॒ प़ प़ ध॒ नि सां, प ग॒ ऽ रे सा।

4) ग॒ म प नि सां, सा ग॒ म प नि सां, प नि सां, प सां, सां ग॒ं रें सा, रें सां नि सां, नि॒ ध॒ प, ग॒ म प नि॒ ध॒ प, ग॒ म प ध॒ नि॒ ध॒ प, ध॒ प म प ग॒, रे ग॒ म ग॒, सा रे प ग॒, रे ग॒ म ग॒, रे ग॒ रे सा, नि़ ऽ ध॒ प़, म़ प़ नि़ सा।